शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

कानपुर विश्वविद्यालय में संचालित सेमेस्टर शिक्षाप्रणाली के प्रति विधि विभाग के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

- डॉ० लक्ष्मी देवी मिश्रा**
- ऋतु सिंह*

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देश में भारत के विश्वविद्यालय उच्चतर कक्षाओं में समेस्टर शिक्षा प्रणाली लागू कर रहे हैं। यह शोध अध्ययन प्रतिदर्श के तौर पर कानपुर विश्वविद्यालय के विधि विभाग के शिक्षकों एवं छात्रों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

विषय संकेतः- सेमेस्टर शिक्षाप्रणाली, अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि, शिक्षण प्रणाली एवं मूल्यांकन आदि का विशेष महत्व है। मूल्यांकन किसी भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अन्तिम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण है, उपयुक्त मूल्यांकन के अभाव में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता, उपयुक्तता एवं आवश्यकता का ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसी कारण समय समय पर मूल्यांकन एवं इससे जुड़ी अन्य कड़ियों में यथोचित सुधार कर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जाता रहा है फिर चाहे वह प्रश्नपत्रों के प्रारूप में परिवर्तन हो या फिर परीक्षण पद्धति में।

प्रस्तुत अध्ययन में कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा विधिस्नातक स्तर पर हाल ही में आरोपित सेमेस्टर शिक्षाप्रणाली के प्रति विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें विधि स्नातक स्तर पर पढ़ने-पढ़ाने वाले 50 विद्यार्थियों एवं 50 शिक्षकों के न्यादर्श पर स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया।

शिक्षा व्यक्ति के जन्म से आरम्भ होकर उसकी मृत्यु तक अनवरत् चलती रहती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी भावी पीढ़ी को उच्च आदर्शों, अभीष्ट आशाओं, सनातन् मूल्यों'-विश्वासों तथा प्राचीन परम्पराओं से युक्त अपनी सांस्कृतिक धरोहर को हस्तान्तरित करता है। परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा का एक उद्देश्य धन अर्जन करना भी है। आज के परिदृश्य में व्यक्ति की आकांक्षा और उद्देश्य उसकी शिक्षा की दशा और दिशा को निर्धारित करती है। जनसंख्या वृद्धि के साथ जहाँ एक ओर बेरोजगारी बढ़ी है। वहीं Survival of the fittest का सिद्धान्त भी प्रतिस्पर्धा के इस दौर को परिभाषित कर रहा है। लगातार जनसंख्या वृद्धि एवं विशाल जन समूह में सीमित अवसरों के कारण प्रतिस्पर्धा होना स्वाभाविक है ऐसी स्थिति में शिक्षा की गुणक्ता को सुनिश्चित करना अनिवार्य है।

शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षण प्रणाली, मूल्यांकन आदि सभी पक्ष महत्वपूर्ण हैं। इनमें से किसी एक पक्ष में कमी रहने से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावित होती है तथा अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहती है। वर्तमान समय की वार्षिक परीक्षा प्रणाली इस बदलते दौर की शिक्षा के उद्देश्य को पूरी तरह से पूर्ण करती नहीं दिखती है। वर्ष भर छात्र सुचारू रूप से कक्षाओं में नहीं आते। शिक्षार्थी जो वर्ष भर कक्षा में ही नहीं आता उसे शिक्षा के उद्देश्य और प्रभाव की जानकारी कैसे होगी? जब शिक्षा को शिक्षा के दृष्टिकोण से न देखकर उसे सिर्फ डिग्री मात्र के रूप में देखा जायेगा और उस डिग्री को प्राप्त करने के लिए येन-केन-प्रकारेण का भाव होगा तो यह भी आसानी से समझा जा सकता है कि उस शिक्षा से व्यक्तिगत्, सामाजिक एवं आर्थिक लक्ष्य कैसे प्राप्त किये जा सकते हैं। ऐसी स्थिति में कुछ ऐसे प्रयासों की आवश्यकता समझी जाती रही है जिससे शिक्षण-अधिगम् प्रक्रिया में गुणात्मक सुधार किया जा सके।

कानपुर विश्वविद्यालय में संचालित सेमेस्टर शिक्षाप्रणाली के प्रति विधि विभाग के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० लक्ष्मी देवी मिश्रा
ऋतु सिंह
प्रवक्ता, एम०एड० विभाग, वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर **छात्र एम०एड० वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

कानपुर विश्वविद्यालय में संचालित सेमेस्टर शिक्षाप्रणाली के प्रति विधि विभाग के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० लक्ष्मी देवी मिश्रा
ऋतु सिंह
प्रवक्ता, एम०एड० विभाग, वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर **छात्र एम०एड० वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social

सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली को वार्षिक परीक्षा प्रणाली पर एक सुधार के रूप में देखा जा सकता है। जिसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम को छोटे-छोटे भागों में बांटकर शिक्षण अधिगम् प्रक्रिया को सम्पादित किया जाता है। इससे शिक्षक एवं छात्र दोनों वर्ष भर क्रियाशील रहते हुये पाठ्यक्रम का व्यापक एवं गहन पठन-पाठन करते हैं।

कुछ विश्वविद्यालय में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली लागू है तथा कुछ में लागू होना शेष है। इस क्रम में कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा यह प्रणाली हाल ही में लागू की गयी है तथा सबसे पहले इसे विधि विभाग पर लागू किया गया है।

अत: ऐसी स्थिति में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली को शिक्षार्थो एवं अध्यापक किस दृष्टिकोण से देख, समझ और अनुभव कर रहे हैं, प्रस्तुत अध्ययन इसी पर आधारित है। क्या वास्तव में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली वार्षिक शिक्षा प्रणाली पर एक सुधार साबित हो सकेगा, यह ज्ञात करने के लिए प्रस्तुत अध्ययन भी एक सहायक कड़ी सिद्ध हो सकता है।

अत: प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है-

''सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।''

सम्बन्धित अध्ययन का सर्वेक्षण-

हलधर, पंकज (2011) ने ''कानपुर नगर स्थित महाविद्यालयों में स्नातक व परास्नातक स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन'' किया तथा इनकी अभिवृत्ति को सकारात्मक पाया। हुसैन, हबीबा (2009) ने छात्रों के मूल्यांकन में सुधार पर कार्य किया तथा पाया कि 90 प्रतिशत शिक्षकों ने छात्रों के अधिक अच्छे निष्पादन के लिए वार्षिक मूल्यांकन की अपेक्षा सेमेस्टर पद्धति का पक्ष लिया, जिसके कारण है- छात्रों द्वारा अधिक अच्छी तरह से अधिगम करना, छात्रों के अधिगम का सतत् मूल्यांकन, शिक्षकों द्वारा अधिक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन, हर छात्र का व्यक्तिगत मूल्यांकन, अधिक उत्तरदायी अधिगमकर्ताओं का निर्माण तथा छात्रों द्वारा अधिक अच्छे अंकों का प्राप्त करना। सिंह, अमिता (1998) ने वार्षिक परीक्षा पद्धति और सेमेस्टर परीक्षा पर तुलनात्मक अध्ययन किया तथा पाया कि 80 प्रतिशत शिक्षक व छात्रों ने वार्षिक पद्धति के स्थान पर सेमेस्टर पद्धति को लागू करने की प्राथमिकता दी। अख्तर, पी0 आर0 (1980) ने भारत के कुछ चुनिन्दा विश्वविद्यालयों में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली का अध्ययन किया तथा पाया कि- विश्व विद्यालय के प्राधिकारी विशेषज्ञों की सहायता से सेमेस्टर प्रणाली लागू करने की पहल कर रहे थे, शिक्षकों के विचारों में-पाठ्यक्रम एवं व्यवस्थापन में लोच और स्वतन्त्रता उनके लिए आनन्दकारी होगी, अधिकतर शिक्षकों एवं छात्रों के विचारों में- छात्रों ने सेमेस्टर पद्धति को प्राथमिकता दी क्योंकि ये कार्यभार को बांट देती है और इसमें सतत् मूल्यांकन के कारण छात्र अपना ग्रेड भी सुधार सकते हैं।

अत: उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर तब जब कि सेमेस्टर प्रणाली लागू हो चुकी है, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना अपेक्षित हो जाता है। अत: वर्तमान अध्ययन इस शोध श्रृंखला की अगली कड़ी के क्रम में है जिसके उद्देश्य हैं-

1. कानपुर नगर में स्थित महाविद्यालयों में विधि स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. कानपुर नगर में स्थित महाविद्यालयों में विधि स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. कानपुर नगर में स्थित महाविद्यालयों में विधि स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों और विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना-

1. कानपुर नगर में स्थित महाविद्यालयों में विधि स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।
2. कानपुर नगर में स्थित महाविद्यालयों में विधि स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षार्थियों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

कानपुर विश्वविद्यालय में संचालित सेमेस्टर शिक्षाप्रणाली के प्रति विधि विभाग के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० लक्ष्मी देवी मिश्रा
ऋतु सिंह
प्रवक्ता, एम०एड० विभाग, वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर **छात्र एम०एड० वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social

3. कानपुर नगर में स्थित महाविद्यालयों में विधि स्नातक पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों और शिक्षार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि के द्वारा किया गया।

अध्ययन की जनसंख्या – कानपुर विश्वविद्यालय के विधि महाविद्यालयों में पढ़ने एवं पढ़ाने वाले समस्त शिक्षार्थी एवं शिक्षक प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या हैं।

न्यादर्शन विधि एवं न्यादर्श – प्रस्तुत अध्ययन में कानपुर विश्वविद्यालय के विधि महाविद्यालयों में से लॉटरी विधि द्वारा कुल चार महाविद्यालय चुने गये जिसमें से गुच्छ प्रतिदर्शन द्वारा 50 शिक्षकों एवं 50 शिक्षार्थियों का न्यादर्श लिया गया है।

उपकरण एवं आंकड़ों का संकलन – लिकर्ट अभिवृत्ति मापनी के आधार पर स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी द्वारा विधि महाविद्यालयों से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति को एकत्रित कर उनके प्राप्तांकों का योग प्राप्त किया गया ।

प्रयुक्त सांख्यिकी-शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के प्राप्तांकों से अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं दो मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता (C.R.) आदि सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

आंकणों का विश्लेषण एवं परिकल्पना की जाँच और व्याख्या –

आंकणों का तालिका प्रदर्शन

क्र०	भोध समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	वि''वास स्तर	निश्कर्श
१.	f''ाक्षक	50	70.90	12.03	2.36	1.61	0.05	असार्थक
२.	f''ाक्षार्थी	50	67.10	11.55				

परिकल्पना नं0 1. कानपुर नगर में स्थित महाविद्यालयों में विधि स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।

तालिकानुसार विधि स्नातक स्तर पर शिक्षकों का मध्यमान 70.90 है अत: हम कह सकते हैं कि विधि स्नातक स्तर के शिक्षकों में सेमेस्टर शिक्षा के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इस आधार पर हमारी परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पना नं0 2. कानपुर नगर स्थित महाविद्यालयों में विधि स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षार्थियों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।

तालिकानुसार विधि स्नातक स्तर पर शिक्षार्थियों का मध्यमान 67.10 है अत: हम कह सकते हैं कि विधि स्नातक स्तर के शिक्षार्थियों में सेमेस्टर शिक्षा के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इस आधार पर हमारी परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पना नं0 3. कानपुर नगर में स्थित महाविद्यालयों में विधि स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों और शिक्षार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका में चूँकि क्रांन्तिक अनुपात (C.R.) का मान 1.61 है, जो 0.05 विश्वास स्तर के मान 1.96 से कम है अत: दोनों के मध्यमानों के बीच 0.05 विश्वास स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। इस आधार पर हमारी परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली में दो कथन ऐसे हैं जो कि उदासीन कथन हैं जिसके प्रत्येक उत्तर में शून्य अंक दिये गये उन प्रश्नों के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति निम्न है-

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

कानपुर विश्वविद्यालय में संचालित सेमेस्टर शिक्षाप्रणाली के प्रति विधि विभाग के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० लक्ष्मी देवी मिश्रा
ऋतु सिंह
प्रवक्ता, एम०एड० विभाग, वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर **छात्र एम०एड० वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social

कथन– सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए शिक्षकों एवं कालेजों पर ज्यादा आश्रित रहना पड़ता है।

इस कथन के सन्दर्भ में 42 प्रतिशत शिक्षक एवं 58 प्रतिशत शिक्षार्थी असहमत हैं।

कथन– सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के लागू होने से विद्यार्थियों के राजनैतिक हिस्सेदारी में कमी आयी है।

इस कथन के बारे में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनो ही अनिश्चित मत रखते हैं क्योंकि बीते समय में छात्र राजनीति पर सरकार द्वारा रोक लगाये जाने के कारण स्वाभाविक रूप से छात्रों की राजनैतिक भागेदारी में कमी आयी है।

शिक्षक समूह

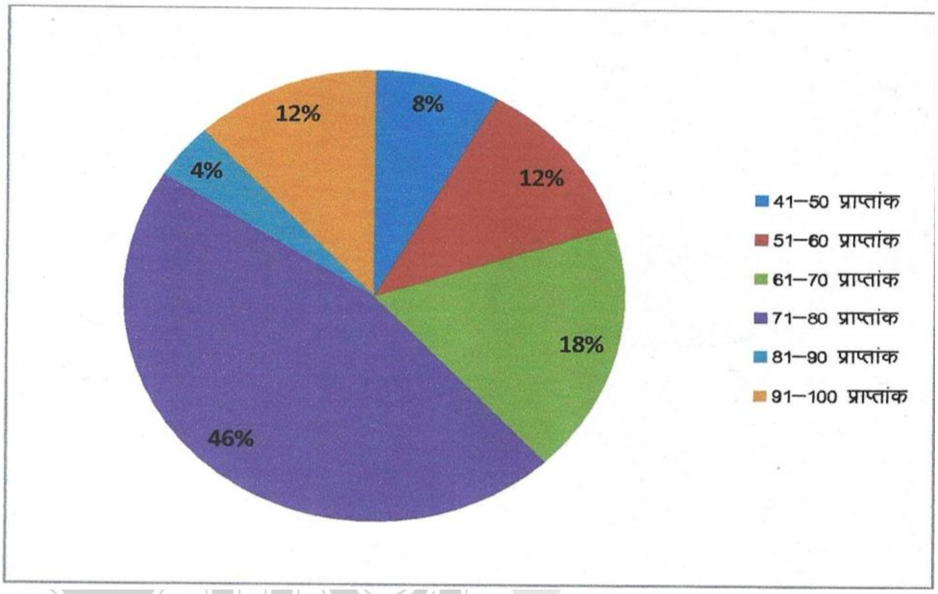

शिक्षार्थी समूह

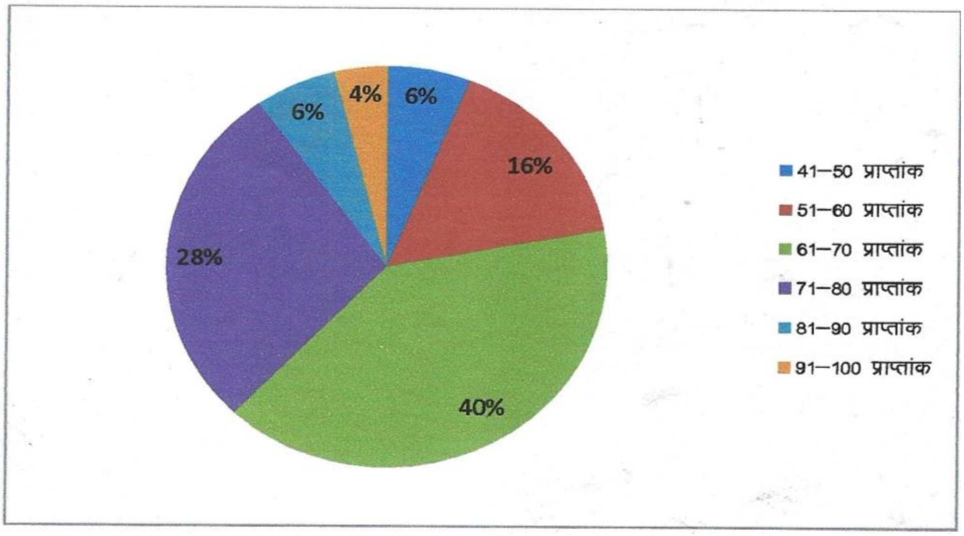

निष्कर्ष एवं सुझावः–

चूंकि विधि स्तर पर प्रारम्भिक अनुभव के रूप में लागू सेमेस्टर शिक्षण प्रणाली में ऐसा पाया गया कि सेमेस्टर को नियमित रखने में मूल्यांकन प्रक्रिया की देरी के कारण नये सत्र के प्रवेश सही समय से नहीं हो पा रहे हैं। अतः यदि समय से छात्रों के प्रवेश और मूल्यांकन की समस्या को सुलझाया जा सके तो अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि निश्चित ही समेस्टर प्रणाली छात्रों की गुणात्मक शिक्षा में एक सकारात्मक योगदान है, जिसे उद्देश्यपूर्ण प्रश्नपत्रों के माध्यम से और अधिक उपयोगी बनाकर छात्रों का गुणात्मक मूल्यांकन बढ़ाया जा सकता है तथा शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

कानपुर विश्वविद्यालय में संचालित सेमेस्टर शिक्षाप्रणाली के प्रति विधि विभाग के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० लक्ष्मी देवी मिश्रा
ऋतु सिंह
प्रवक्ता, एम०एड० विभाग, वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर **छात्र एम०एड० वी०एस०एस०डी० कालेज कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social

विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की अर्भिवृत्ति में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है तथा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों की सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति अभिवत्ति लगभग समान रूप से सकारात्मक है अर्थात शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनो सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के द्वारा शैक्षिक प्रगति की अपेक्षा करते हैं क्योंकि इससे दोनों पूरे सत्र सक्रिय रहते हुए पठन-पाठन की क्रिया में संलिप्त रहते हैं, पाठ्यक्रम का बोझ कम हो जाता है तथा छात्रों का मूल्यांकन और अधिक व्यापक, सतत एवं नियोजित हो जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. अख्तर, पी0 आर0 (1980), भारत में कुछ चुनिन्दा वि0वि0 में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन, थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन 1978-83, एन0सी0ई0आर0टी0 दिल्ली, पेज नं0 866।
2. गुप्ता, एस0पी0 (2004), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पेज नं0 2-5।
3. हलधर, पंकज (2011), कानपुर नगर स्थित महाविद्यालयों में स्नातक व परास्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्तियां का तुलनात्मक अध्ययन, एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर।
4. हुसैन, हबीबा (2009), इम्प्रूविंग स्टूडेण्ट्स ईवैल्यूवेशन, क्वालिटी एजूकेशन, ए0पी0एच0 पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।
5. शील, अवनीन्द्र (2009), भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें, साहित्य रत्नालय, कानपुर, पेज नं0 81।
6. सिंह, अमिता (1998), वार्षिक परीक्षा पद्धति और सेमेस्टर परीक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर, पेज नं0 22-24।

शोध संचयन SHODH SANCHAYAN